18
लोक संत पीपा (संकलित)

पाठ परिचय –

राजस्थान के प्रमुख लोक संतों में गिने जाने वाले खींची चौहान राजवंश में जन्मे संत पीपा ने मध्यकालीन निर्गुण भक्ति काव्यधारा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। राजपाट तक को त्यागकर तथा संपूर्ण वैभव को एक तरफ छोड़कर इन्होंने समाज सुधार और निर्गुण भक्ति साधना के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया। राजस्थान के लोक संत पीपा का जीवन चरित्र भारतीय समाज सुधारकों के लिए अद्भुत और अनुपम है। यही कारण है कि जीवमात्र की समानता के प्रबल पक्षधर लोकसंत पीपा आज भी हमारे हृदय में जीवित हैं।

लोक संत पीपा

राजस्थान के प्रख्यात लोक संत एवं भक्त कवि पीपा का जन्म वि.सं. 1390 के आसपास झालावाड़ जिले के गागरौन नामक स्थान पर हुआ माना जाता है। खींची चौहान राजवंश में जन्मे पीपा आकर्षक व्यक्तित्व के धनी युवा थे। युवावस्था में ही पिता की मृत्यु के उपरान्त राजगद्दी पर आसीन हो गागरौन का राजकाज इन्होंने सँभाल लिया। कुशल शासक और धीर गंभीर स्वभाव के कारण ये प्रजा के चहेते थे। अपने शासन काल में इन्होंने कई विजय प्राप्त कर अपना राज्य विस्तार किया। सांसारिकता को त्याग कर ये प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर हुए तथा संत काव्य धारा में अभूतपूर्व योगदान देकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। मध्यकालीन भक्ति साहित्य में महान समाज सुधारक संत पीपा ने अपनी वाणी और विचारों से जहाँ एक ओर बाह्याडम्बरों का विरोध, रूढ़ि–परम्पराओं का विरोध, दुर्व्यसनों का विरोध इत्यादि किया, वहीं दूसरी ओर निर्गुण निराकार परम ब्रह्म की भक्ति कर संत काव्य धारा में अपनी उपस्थिति से हिन्दी साहित्य के पूर्व मध्यकाल को गौरवान्वित किया। ये एक ऐसे संत कवि थे जिन्होंने भक्ति और समाज सुधार का अद्भुत रूप सामने रखा है। कबीर की परम्परा का अनुसरण करते हुए इन्होंने कबीर की मान्यताओं को भक्ति–प्रतिष्ठा के लिए सार्थक बताया है। अपनी वाणी में संत कबीर को ये झूठी सांसारिकता और कलियुग की अंधविश्वासी रीतियों के खण्डन के रूप में प्रस्तुत करते हैं तथा कहते हैं कि कबीर न होते तो सच्ची भक्ति रसातल में पहुँच जाती :–

"जै कलि नाम कबीर न होते।
तौ लोक बेद अरु कलिजुग मिलि करि। भगति रसातलि देते।"

कहा जाता है कि पहले तो पीपा मूर्ति पूजक थे। देवी दुर्गा के उपासक थे। उस समय भारत में वैष्णवों का बहुत बोलबाला था। एक बार इनके राज्य में वैष्णव भक्त मण्डली आई जिसके मुखिया ने इन्हें परमात्मा के आगे शुद्ध हृदय से आराधना करने तथा काशी जाकर गुरु रामानन्द गुसाईं से मिलने की सलाह दी। यह सुनकर पीपा अपनी रानी सीता सहित काशी की तरफ चल पड़े। जब त्रिकालदर्शी स्वामी रामानन्द को पीपा के आने का समाचार मिला तो उन्होंने आश्रम का दरवाजा यह कहकर बंद करवा दिया कि 'हम गरीब हैं, राजाओं से हमारा क्या मेल'। पीपा ने उसी समय अपना सारा धन निर्धनों में बाँट दिया तथा लाव–लश्कर वापस गागरौन भेज दिया। तत्पश्चात् गुरू रामानन्द के पास आकर दंडवत चरण पकड़ निवेदन किया कि ''महाराज इस भवसागर से पार होने का साधन बताओ''। स्वामी रामानन्द ने 'राम' नाम सुमिरन की आज्ञा देकर कहा – "राम नाम का आँचल मत छोड़ना। 'राम' नाम ही सर्वोपरि है।" पीपा की सोई हुई आत्मा जाग उठी। रामानन्द जी से दीक्षा लेकर वे उनके शिष्य बन गए। पूर्ण उपदेश प्राप्त कर वे गागरौन वापस लौट आए। यहाँ आकर उनकी दिनचर्या ही परिवर्तित हो गई। दिन–रात हरि–सुमिरन में समय व्यतीत होने लगा। राजकाज से मन उचट गया। राजपाट को वे अहंकार और भय का कारण मानने लगे। एक दिन ऐसा भी आया जब वे सब कुछ त्याग कर वैराग्य धारण कर प्रभु भक्ति में लीन हो गए। यह संसार और शरीर उन्हें मिथ्या लगने लगा। आत्मा और परमात्मा को एक मानते हुए सच्चे गुरु के बताए मार्ग पर वे चले पड़े –

"जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे, जो खोजै सो पावै।
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिX# होई लखावै।''

संत पीपा जब उपदेश दिया करते थे तो उनके भक्तों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। वे वाणी का पाठ भी किया करते थे। वे मानते थे कि "यह जो पंचतत्व शरीर है, यही प्रभु है। भाव शरीर में जो आत्मा है वही परमात्मा है। साधु संतों का घर भी शरीर है। पंडित देवताओं की पूजा करते हैं किन्तु पूजन की सब सामग्री शरीर में है। सब कुछ तन में है। सतगुरु की कृपा होने पर सब कुछ इस तन से प्राप्त हो सकता है" –

''कायउ देवा काइयउ देवल काइयउ जंगम जाती।
काइयउ धूप दीप नहीं बेदा काइयउ पूजऊ पाती।।"

सच्चे गुरु के प्रभाव से ही सांसारिक मनुष्य मोह माया को त्यागकर भवसागर को पार कर सकता है। गुरु रामानन्द को ही वे श्रेय देते हैं जिन्होंने पीपा को लोहे से स्वर्ण में परिवर्तित कर दिया तथा अपनी चरण रज देकर संसार के फंदे को काट दिया –

"लोह पलट कंचन कियो सतगुरु रामानन्द
पीपा पद रज है सदा, मिट्यो जगत को फंद।"

पीपा की मान्यता थी कि समाज में कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब एक ही ईश्वर के बन्दे हैं। ईश्वर के सामने सभी जीव समान हैं। परमपिता परमात्मा अपनी संतान में कभी भेदभाव नहीं करता। उसकी दृष्टि में कोई ब्राह्मण और कोई शूद्र नहीं हैः–

"एकै मारग तें सब आया। एकै मारग जाही।।
एकौ माता पिता सबही के। विप्र छुद्र कोई नाहीं।।"

पीपा जी के इन्हीं उपदेशों के प्रभाव से कृष्ण की अनन्य भक्त मीराबाई भी प्रभावित हुई थीं। पीपा के भक्तिभाव और समर्पण से ही प्रभावित होकर वे उनसे मिलने पहुँची थीं। मीरा ने अपनी पदावली में पीपा से अपने मिलने का संकेत भी दिया है :–

"पीपा को प्रभु परचो दीन्हो दियो रे खजानो पूरि।"

पीपा ने अपनी भक्ति भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, हिम्मत, दृढ़ निश्चय जाग्रत करते हुए समाज के रूढ़ि बंधनों को तोड़ने की चेतना का भाव जगाया। राजा होते हुए भी अपना सम्पूर्ण वैभव त्यागकर समाज सुधार और निर्गुण भक्ति साधना के प्रति उन्होंने अपना जीवन लगा दिया। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है।

लोक संत के रूप में पीपा इसलिए भी अतिप्रिय थे क्योंकि वे हिंसा के घोर विरोधी थे। माँस भक्षण की वे सर्वथा निन्दा करते हैं। माँसाहार को वे वर्जित मानते हैं :–

"जीव मार जीमण करै, खाता करै बखाण।
पीपा परतख देख ले, थाली मांहि मसाण।"

संत पीपा ने इसी प्रकार उपदेश करते हुए भ्रमण किया। जहाँ–जहाँ वे जाते उनके भक्तों और अनुयायियों की संख्या बढ़ती जाती। जिस किसी को भी पता चलता कि पीपा राजगद्दी त्यागकर भक्त बने हैं तो भीड़ की भीड़ उनके दर्शन करने आ जाती। बड़े–बड़े राजा, नवाब, धनिक, आदि उनके उपदेश सुनते। पीपा जी निर्गुण निराकार ब्रह्म का उपदेश देते और मूर्ति पूजा का खण्डन करते।

राजस्थान के लोक संत पीपा का जीवन चरित्र भारतीय समाज सुधारकों के लिए अद्‌भुत और अनुपम है। यही कारण है कि उनकी कर्मशीलता और भक्तिनिष्ठा लोकवाणी का विषय भी बनी। वर्तमान में भी संत पीपा राजस्थानी लोकगीतों में विराजमान हैं। उनकी वाणी अमर हो गई है। उनकी अटूट–भक्ति ने राजस्थान में समाज सुधार की चेतना को विकसित किया है। आहू और कालीसिंध नदियों के संगम स्थल पर बना प्राचीन जल दुर्ग उनका जन्म स्थल तथा शासन स्थल रहा है। यहीं उनकी भक्ति साधना की गहन गुफा, समाधि स्थल तथा विशाल मंदिर एवं आश्रम विद्यमान है। माना जाता है कि वि.स. 1470 में इनका देवलोकगमन हुआ, परंतु जीवमात्र की समानता के प्रबल पक्षधर लोकसंत पीपा आज भी हमारे हृदय में जीवित हैं।

कठिन शब्दार्थ

बाह्याडम्बर	–	उपासना के बाहरी आडम्बर
दुर्व्यसन	–	बुरी आदतें
निर्गुण	–	गुणातीत
निराकार	–	आकाररहित
रसातल	–	पूरी तरह से नष्ट करना
वैष्णव	–	विष्णु के उपासक
त्रिकालदर्शी	–	तीनों लोको की बात जानने वाला
भव सागर	–	संसार रूपी सागर
पंचतत्व	–	पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश
रज	–	धूल
दुर्ग	–	किला

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. पीपा निम्नलिखित में से किस काव्यधारा से संबंधित हैं :-

   (क) सूफी काव्यधारा (ख) संत काव्यधारा

   (ग) राम भक्ति काव्यधारा (ग) कृष्ण भक्ति काव्यधारा

2. पीपा ने किस कवि की परम्परा का अनुसरण किया :-

   (क) सूरदास (ख) मलिक मुहम्मद जायसी

   (ग) तुलसी (घ) कबीर

3. पीपा से मिलने का संकेत किसने अपने काव्य में किया है :-

   (क) सूरदास (ख) मीराबाई

   (ग) कबीर (घ) रामानन्द

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. संत पीपा का जन्म कब एवं कहाँ हुआ?
2. पीपा की पत्नी का नाम क्या था?
3. पीपा के आने पर स्वामी रामानन्द ने आश्रम का दरवाजा बंद क्यों करवा दिया?
4. संत पीपा का मन राजकाज से क्यों उचट गया?

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

5. संत पीपा की भक्ति पद्धति पर टिप्पणी लिखिए?
6. संत पीपा के परमात्मा के स्वरूप संबंधी विचारों को बताइए?
7. पीपा ने अपनी भक्ति भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग को किस प्रकार दृढ़ बनाया?

निबंधात्मक प्रश्न –

8. लोक संत पीपा के जीवन चरित्र पर संक्षेप में प्रकाश डालिए?
9. संत पीपा का चरित्र चित्रण कीजिए?
10. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

    (क) जब त्रिकालदर्शी ---------------------- साधन बताओ।

    (ख) पीपा ने अपनी भक्ति भावना -------------------- बड़ी विशेषता है।